पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण — मॉड्यूल चार — वाचाई विश्वासयोग्यता

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपके विचार से आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. क्या वाचाई विश्वासयोग्यता की माँग आज भी हम पर लागू होती है, या हम इस माँग से मुक्त हैं क्योंकि यीशु की सिद्ध आज्ञाकारिता पहले से ही हम पर लागू हो चुकी है?
3. इस्राएल कई बार मूर्तिपूजा का दोषी रहा। सुधारक जॉन कैल्विन ने लिखा कि “मनुष्य का स्वभाव मूर्तियों का एक सतत कारखाना है।” आपका मन किसे मूर्ति के समान मानता है? आप जिस संस्कृति में रहते हैं वह किसे एक मूर्ति के समान मानती है? आप अपने जीवन और संस्कृति में इस मूर्तिपूजा को संबोधित करने और इसे ठुकरा देने के लिए क्या कर सकते हैं?
4. पुराने नियम के इस्राएलियों ने अक्सर परमेश्वर की स्मृति में पत्थर खड़े किए थे। क्या आज मसीहियों के लिए भौतिक वस्तुओं से परमेश्‍वर को स्मरण करना गलत है? आज विश्वासी लोग परमेश्वर और उसके महान कार्यों का उत्सव कैसे मना सकते हैं और कैसे उसे स्मरण कर सकते हैं?
5. यहोशू ने परमेश्वर के महान कार्यों को स्मरण करके इस्राएल को परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की याद दिलाई। आज हम कलीसिया में इसी प्रकार का कार्य कैसे करते हैं? वे कौन से तरीके हैं जिनसे हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से परमेश्वर की अतीत की विश्वासयोग्यता को कार्य में ला सकते हैं और उसे स्मरण कर सकते हैं?
6. आपके विचार से परमेश्वर का क्या अर्थ था जब उसने यिर्मयाह के द्वारा कहा, “मैं अपनी व्यवस्था उनके (अपनी प्रजा के) मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा” (यिर्मयाह 31:33)? आज हमारे जीवन के लिए इस प्रतिज्ञा का क्या अर्थ है?
7. पुराने नियम के इस्राएलियों को पिछली वाचाओं के अंतर्गत जो आशीषें मिली थीं, उनसे अधिक आशीषें हमें नई वाचा के अंतर्गत कैसे मिलती हैं? आपने अपने जीवन में इन आशीषों को कैसे प्रकट होते देखा है?
8. इब्रानियों 12:5-11 पढ़ें। यदि परमेश्‍वर ने यीशु की प्रायश्चित की मृत्यु के द्वारा हमारे पापों को क्षमा कर दिया है, तो वह क्यों हमारी ताड़ना करता है? हम कैसे इस लेख का प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति को करुणा के साथ परामर्श देने के लिए कर सकते हैं जो कठिनाइयों या परेशानियों से होकर जा रहा है?
9. प्रेरित पौलुस ने सिखाया कि जब तक यीशु अपने राज्य को पूर्ण करने के लिए वापस नहीं आ जाता, तब तक कलीसिया में “झूठे भाई” पाए जाएँगे, और यदि वे मन नहीं फिराते, तो उन्हें परमेश्वर का अनंत दंड सहना पड़ेगा। क्या आपकी स्थानीय कलीसिया में अविश्वासियों की उपस्थिति के कारण आपके वचन के प्रचार करने के तरीके में बदलाव आना चाहिए? क्यों या क्यों नहीं?

**समीक्षा कथन :** कभी-कभी मसीही वैध कारणों से भी दुःख उठाते हैं, लेकिन कई बार वे इसलिए दुःख उठाते हैं क्योंकि उन्होंने परमेश्‍वर की उदारता के प्रति धन्यवाद से प्रत्युत्तर नहीं दिया और इस प्रकार उसके प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे। फलस्वरूप, उन्हें वाचा के शाप मिले। यहोशू की पुस्तक इस्राएल को याद दिलाती है कि वे जो दुःख सह रहे हैं, उसका कारण यह नहीं है कि परमेश्वर उनके प्रति अविश्वासयोग्य रहा है, बल्कि इसलिए कि वे परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य रहे हैं। उन्होंने अन्य देवताओं पर, अर्थात् मूर्तियों पर अपना भरोसा रखा है।

**विषय का अध्ययन 1 :** जेरेमी और एना ने सोचा कि अपने पहले बेटे — एरन — के पालन-पोषण का सबसे अच्छा तरीका किसी भी तरह की ताड़ना को दूर रखना है। उन्होंने सोचा कि यदि वे उसके प्रति दयालु रहेंगे, तो वह भी दयालु होना सीखेगा। उन्होंने उस पापमय स्वभाव पर ध्यान नहीं दिया जिसके साथ सब लोग जन्म लेते हैं। क्योंकि उनके बेटे को उसके अनाज्ञाकारी कार्यों के लिए कभी कोई नकारात्मक परिणाम नहीं भुगतना पड़ा, इसलिए वह बड़ा होकर एक विद्रोही व्यक्ति बन गया।

**विषय का अध्ययन : 2** अलेजांद्रो एक मसीही परिवार में बड़ा हुआ, लेकिन वह परमेश्वर के प्रति बहुत कड़वाहट से भर गया। जब वह 8 वर्ष का था तो उसके पिता की मृत्यु हो गई। स्कूल में उसके सहपाठियों ने उसे स्वीकार नहीं किया। वह हकलाता था, इसलिए वे उसका मजाक उड़ाते थे। उसे अच्छे अंक नहीं मिले। उसे ऐसा महसूस हुआ कि वह किसी भी काम में अच्छा नहीं है और कोई उसका सम्मान नहीं करता।

**विषय का अध्ययन : 3**  परमेश्‍वर ने अय्यूब को दुःख सहने दिया, लेकिन उसका दुःख उठाना उसके पाप के कारण नहीं था। परमेश्‍वर ने शैतान से पूछा था, “क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है?” इसका अर्थ यह है कि अय्यूब परमेश्‍वर की सेवा इसलिए करता है क्योंकि वह उससे प्रेम करता है। शैतान ने कहा, “निस्संदेह, वह तेरी सेवा करता है। देख, तूने उसे कितनी आशीष दी है। उसकी आशीष छीन ले, तो वह फिर कभी तेरी सेवा नहीं करेगा। तूने उसका प्रेम ख़रीदा है।”

मनन के प्रश्न :

1. क्या आप एरन जैसे किसी को जानते हैं जो बिना किसी ताड़ना के बड़ा हुआ हो? अपने अनुभव बाँटें।
2. आप उन माता-पिता के बारे में कैसा महसूस करते हैं जो अपने बच्चों की ताड़ना नहीं करते?
3. आप उन माता-पिता के बारे में कैसा महसूस करते हैं जो अपने बच्चों की तो ताड़ना करते हैं, लेकिन कुंठा और प्रेम के अभाव के कारण?
4. आप इन दो प्रकार की ताड़ना के बीच कैसे अंतर कर सकते हैं?
5. क्या आपने कभी परमेश्‍वर के प्रति इसलिए क्रोधित महसूस किया है क्योंकि उसने आपके जीवन में कुछ कठिनाई आने दी, या इसलिए कि उसने आपको वह नहीं दिया जो आप चाहते थे? अपने अनुभव बाँटें।
6. क्या परमेश्वर ने कभी आपके जीवन में वाचा के शाप भेजे हैं कि आप मन फिराएँ? अपने अनुभव बाँटें।
7. कठिन परिस्थितियों में भी आप परमेश्‍वर के प्रति अपना धन्यवाद कैसे प्रकट करते हैं?

दिए जानेवाले कार्य :

1. पाँच विश्वासियों से पूछें कि उनके विचार से मसीही क्यों दुःख उठाते हैं।
2. पाँच इच्छुक अविश्वासियों से पूछें कि उनके विचार से लोग क्यों दुःख उठाते हैं।
3. पिछले दो असाइनमेंट से अपने निष्कर्षों को संकलित करें और उसके डेटा का विश्लेषण करें। अपने निष्कर्ष लिखिए। बाइबल के दृष्टिकोण से उनकी तुलना करें और उनमें अन्तर बताएँ।